

# आधारमूर्त, उद्धारमूर्त एवं पूर्वज आत्मा होने की अनुभूति

**लक्षः** सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष को इमर्ज कर, उसकी जड़ों में तपस्वी रूप में स्थित हो कर, समग्र वृक्ष की एक एक शाखाओं का सशक्तिकरण करते हुए, विश्व की आधारमूर्त उद्धारमूर्त आत्मा होने की अनुभूति करना ।

## योगाभ्यास के क्रमिक सोपानः

1. देहभान का परित्याग कर, आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर, आत्मा की अनंतता का और शाश्वतता का अनुभव करना। विश्व नाटक में अपने पार्ट की शाश्वतता का भी अनुभव करना। सभी हदों में से बहार निकल कर स्वयं के वैश्वीकरण का अनुभव करना।
2. समग्र सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष को, उसके सूक्ष्म विवरण सहित, उसकी पूर्ण विकसित अवस्था में अपने मानस पटल पर इमर्ज करना।
3. एक तपस्वी के रूप में कल्पवृक्ष की जड़ों में बैठे हुए स्वयं को इमर्ज करना और महसूस करना की पूरा कल्पवृक्ष मुझ पर आधारित है, निर्भर है। मानस दर्शन करे की मेरे सिर पर कल्पवृक्ष की जड़ें बिखरी पड़ी हैं ।
4. संपूर्ण कल्पवृक्ष की वर्तमान तमोप्रधान जीर्ण अवस्था का मानस दर्शन करे और इस कल्पवृक्ष में विश्व की वर्तमान वास्तविक स्थिति को देखें।

5. इस कल्पवृक्ष को फिर से जीवंत करने के लिए, यह महसूस करें कि मुझ आत्म से निकलती पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति की विविध रंगी लहरे शाखा और प्रशाखाओं के माध्यम से हर आत्मा रूपी अंतिम पत्ते तक पहुँच रही है। वो उजागर हो रही है।

6. विश्व के विभिन्न धर्मों की आत्माओं को, जो कल्पवृक्ष की शाखाएं हैं, शुद्ध प्रेम और शक्तियों से संपन्न करें और अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करें कि उनका विश्वास ज्योति रूप परमात्मा के साथ-साथ उनके धर्म के संस्थापक में भी बढ़े।

## योगाभ्यासः

आरामदायक मुद्रा में बैठें और अपने शरीर को शिथिल कर दें। कुछ गहरी सांसें लेते हुए किसी भी प्रकार का तनाव वा व्यग्रता हो तो, उससे मुक्त हो जाए। अब अपने भौतिक और सूक्ष्म शरीर को इमर्ज कर अपने मनःचक्षु द्वारा उसका मानस दर्शन करें। अपना ध्यान अपने मष्तिस्क के केंद्र में केंद्रित करें और उस स्थान पर स्वयं को एक दिव्य एवं चमकते हुए सितारे के रूप में देखें। अब द्रढ़तापूर्वक इस प्रकार स्वसुचन करें

“मैं एक आत्मा हूँ ... मेरे भौतिक और सूक्ष्म शरीर से अलग मैं एक स्वयं प्रकाशित चमकता हुआ सितारा हूँ.... दोनों देह मुझ



आत्मा के लिये सिर्फ वस्त्र मात्र हैं..... इस विश्व नाटक में मेरी भूमिका निभाने के लिए साधन मात्र हैं ... मैं आत्मा अति सुक्ष्म हूँ.... दिव्य प्रकाश और शक्ति का पूंज हूँ..... प्रकृति के पांच तत्वों से बना हुआ मेरा यह भौतिक शरीर विनाशी है.... लेकिन मैं आत्मा अविनाशी एवं अनादि हूँ..... मेरी शाश्वतता और सनातनता मेरा बहुत ही महत्वपूर्ण मौलिक गुण हैं..... इसके कारण मैं अक्षय, अविभाज्य, अविनाशी हूँ.... मेरा, चैतन्य प्रकाशबिंदु के रूप में, अस्तित्व अनादी समय से है और अनंत काल तक बना रहेगा..... मेरा न कोई आदि है, न कोई अंत है..... मैं अनादि, अनंत हूँ.....

यह विश्व नाटक भी अनादि है और अविनाशी है..... इस में मेरा पार्ट भी अनादि-अविनाशी है..... इस विश्व नाटक में मेरा पार्ट सृष्टिचक्र के आदि से लेकर अंत तक पुरे 84 जन्मों का है.... यह 84 जन्मों के मेरे ऑलराउंड पार्ट का मैंने अनंत बार पुनरावर्तन किया है.... और भविष्य में भी अनंत बार पुनरावर्तन करती रहूँगी..... प्रत्येक जन्म में मैं पुरानी देह को छोड़कर एक नई देह को धारण करती हूँ..... मेरा जीवन निरंतर है.... मेरी भूमिका भी निरंतर है....

इस विश्व नाटक की मैं एक विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ.... इस विश्व नाटक की मैं एक आधारमूर्त एवं उद्धारमूर्त आत्मा हूँ.... विश्व नाटक की सभी पार्टधारी आत्माओं की मैं पूर्वज आत्मा हूँ.... सृष्टिचक्र के संगमयुग पर, मेरे परमपिता प्यारे शिवबाबा के साथ, मास्टर विश्व परिवर्तक के रूप में मेरा सर्वोत्तम पार्ट नुंधा हुआ है.... मैं एक मास्टर त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री आत्मा हूँ.... मैं मास्टर त्रिमूर्ति, त्रिलोकीनाथ आत्मा हूँ.... वर्तमान समय बाबा के साथ मैं भी मास्टर त्रिमूर्ति के रूप में स्थापना, पालना एवं विनाश का विशेष पार्ट बजा रही हूँ.... मैं विश्वकल्याणी, मंगलकारी आत्मा हूँ.... मैं एक संपन्न आत्मा हूँ.... महादानी हूँ,,,,, वरदानी हूँ..... मैं सौभाग्यशाली आत्मा हूँ की बाबा के साथ साथ मैं भी विश्व की आत्माओं को वरदानों से भरपूर कर रही हूँ.... मैं एक मास्टर गुणसागर, मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ.... मेरे माध्यम से बापदादा द्वारा सारे विश्व का सशक्तिकरण एवं सम्पन्नीकरण हो रहा है....

सारे सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष के मूल में मैं एक आधारमूर्त और उद्धारमूर्त आत्मा के रूप में बिराजमान हूँ... सारे सृष्टिचक्र में विभिन्न डायनेस्टी की आत्माएं एवं समग्र प्रकृति मुझ आत्मा की अवस्था पर निर्भर है.... कल्पवृक्ष की जड़ों के रूप में, मैं समग्र विश्व की एक जिम्मेवार आत्मा हूँ..... सारा कल्पवृक्ष हम पूर्वज ब्राह्मण आत्माओं पर खड़ा है....

(समग्र कल्प वृक्ष का मानस दर्शन करें और अपने आपको कल्पवृक्ष की जड़ों में आधारमूर्त के रूप में बिराजमान देखे)

मुझ मास्टर गुणसम्पन्न, पवित्र आत्मा में से पवित्रता की सुनहरे (Golden) रंग की लहरे निकल रही है.... और उसका प्रसारण कल्पवृक्ष के तने के माध्यम से उसकी शाखाओं एवं प्रशाखाओं में हो रहा है.... अंत में वो लहरे पत्तो रूपी विभिन्न आत्माओं में समा रही है..... एक एक आत्मा

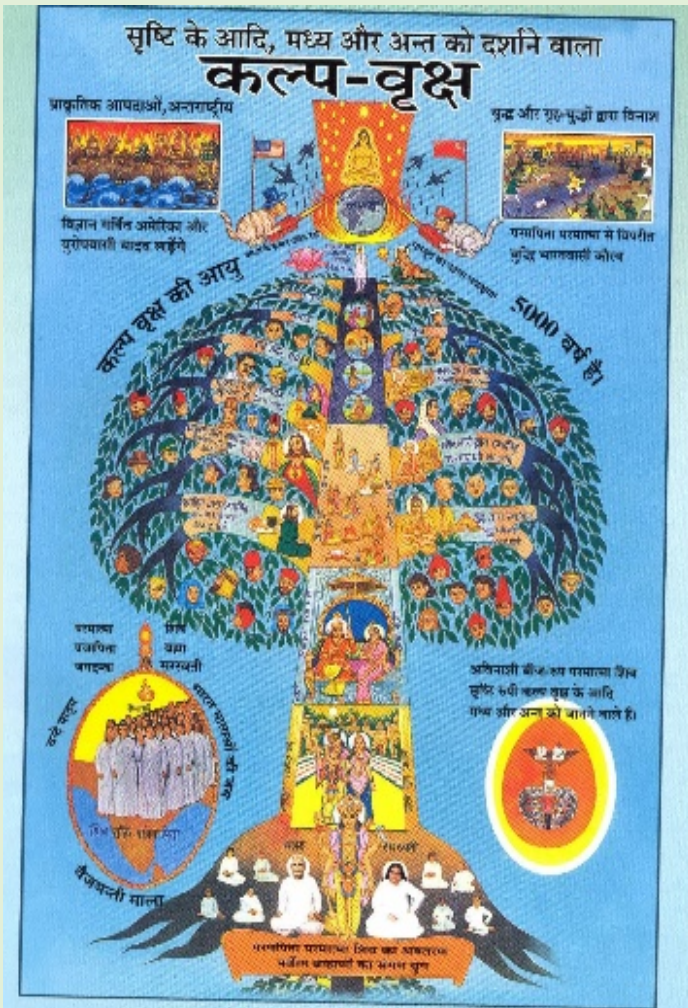
प्रशाखाओं के माध्यम से आत्माओं रूपी पत्तो में समा रही है.... हर आत्मा शान्ति से संपन्न हो रही है और शान्ति की गहन अनुभूति कर रही हैं....

मैं मास्टर प्रेमसागर आत्मा हूँ.... मिझ से हरे (Green) रंग की प्रेम की लहरे चारो ओर फैल रही हैं.... कुछ लहरे कल्पवृक्ष के तने और शाखा-प्रशाखाओं के माध्यम से आत्मा रूपी हर पत्ते को पहुँच रही हैं.... हर आत्मा प्रेम संपन्न होती जा रही हैं.... उन के हर संबंध सरलता और सुसंवादिता से परिपूर्ण हो रहे हैं....

मुझ मास्टर आनंद सागर आत्मा से नीले बैंगन (Violet) रंग की आनंद और सुख की लहरों का प्रसारण हो रहा है.... वो लहरे भी कल्पवृक्ष के अंतिम पत्ते तक पहुँच रही हैं.... हर आत्मा ईश्वरीय परमानंद की अनुभूति कर रही हैं....

मुझ मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा में से विभिन्न शक्तियों की लाल रंग (Red) की विविध लहरे निकल रही है.... और वो लहरे शाखा-प्रशाखाओं के माध्यम से आत्माओं रूपी पत्तो में समा रही है..... हर आत्मा का सशक्तिकरण हो रहा है....

विश्व के विभिन्न धर्म जो कल्पवृक्ष की शाखाओं के रूप में हैं..... और उन पर लगे पत्ते उन धर्मों की आत्माओं के रूप में हैं.... मेरे हृदय की यही शुभभावना है की उनका विश्वास और निश्चय ज्योति स्वरूप परमात्मा में हो.... उस एक निराकार को याद करे.... साथ साथ उनके धर्म संस्थापक में भी उनका विश्वास बढ़े.... और अपने धर्म



का शुद्धिकरण हो रहा है.....वो पवित्रता से संपन्न हो रही हैं....

मुझ मास्टर शान्तिसागर आत्मा से शान्ति की आसमानी (Sky) रंग की लहरे निकल रही हैं... और वो लहरे शाखा



की डायनेस्टी में पुरुषार्थ कर अपना उंच पद प्राप्त करें.....

अमेरिका एवं रशिया जैसी महासत्ताओं ने इस पुराने जड़जड़ीभुत कल्पवृक्ष के विनाश की पूरी तैयारी कर ली हैं.... प्रकृति भी उसमें सहयोग दे रही हैं.... बाबा और अन्य मेरे आत्मिक भाईओं के साथ परमधाम जाने के लिए मैं अब उत्सुक हूँ....



मैं एक उध्धार मूर्त आत्मा हूँ..... विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ.... विश्व की सभी आत्माओं की मुक्ति और जीवन मुक्ति के लिए, बाबा के साथ साथ, मैं भी एक निमित्त जिम्मेवार आत्मा हूँ.....परमात्मा की आदि की श्रेष्ठ रचनाओं में से मैं एक पूर्वज एवं पूज्य आत्मा हूँ.... धर्म पिताओं को भी बाबा का सन्देश देने वाली मैं पूर्वज निमित्त आत्मा हूँ.... ग्रेट ग्रेट ग्रैंड फाधर ब्रह्माबाबा की साथी मैं पूर्वज आत्मा हूँ.... मैं अनुभव कर रही हूँ की इस विश्व नाटक के पुरे चक्र की मैं एक आधारमूर्त और उध्धारमूर्त आत्मा हूँ.....

----- ॐ शान्ति -----

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

(M) +91 98258 92710